Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
International Conference on Emerging Trends in Design and Arts
May 2024 5(1 ICETDA24), 400–401

COMPANY PAINTING A SYMBOL OF ART AND CULTURE

कंपनी पेंटिंग कला और संस्कृति का प्रतीक है

Shikha Pandey [1]

[1] Research Scholar, Teerthanker Mahaveer University, Uttar Pradesh, India

ABSTRACT

English: The relationship between knowledge and craft can guide a better understanding of social needs, and the researcher works to bridge this gap through informal sources such as arts and culture.
Photographs of places and people experienced by tourists and foreign residents are often brought home as souvenirs and to disseminate information among people in society.

Hindi: ज्ञान और शिल्प का संबंध सामाजिक आवश्यकताओं की बेहतर समझ का मार्गदर्शन कर सकता है, और शोधकर्ता कला और संस्कृति के माध्यम से अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से इस अंतर को पाटने का कार्य करता है।
पर्यटकों और विदेशी निवासियों द्वारा अनुभवित स्थानों और लोगों की तस्वीरें अक्सर यादगार के रूप में घर लाई जाती हैं और समाज के लोगों के बीच जानकारी को विस्तारित करने के लिए।

Keywords: Culture, Souvenirs, Miniatures, Traditional, Picturesque, Manuscripts, संस्कृति, स्मृति चिन्ह, लघुचित्र, परंपरागत, सुरम्य, पांडुलिपियों

Corresponding Author
Shikha Pandey,
shikhashlokpandey13@gmail.com

DOI 10.29121/shodhkosh.v5.i1 ICETDA24.2024.1769

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

जब फोटोग्राफी ने 19वीं शताब्दी के अंत में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा।दक्षिण एशिया में रहने वाले कई यूरोपीय ने उस क्षेत्र की वनस्पति, जानवर, स्मारक, और स्थानीय लोगों के व्यक्तिचित्रों का संग्रह खरीदा। ये कार्य, स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए होते थे, परन्तु विशेष रूप से यूरोपीय दर्शकों के लिए निर्मित किए जाते थे, इस काल-खंड एवं उद्देस्य से बने चित्रों को "कंपनी-पेंटिंग्स" की पसंदीदा श्रेणी में रखा जाता है।

"कंपनी शैली" या "कंपनी पेंटिंग" एक हाइब्रिड शब्द है, जिसमें भारत में भारतीय कलाकारों द्वारा बनाई गई यूरोपीय पेंटिंग की शैली को संदर्भित किया जाता है, जिनमें से कई 18वीं और 19वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी या अन्य विदेशी कंपनियों के लिए काम करते थे।

सबसे प्रारंभिक "कंपनी पेंटिंग्स" मद्रास राज्य में बनाई गई थीं। कुछ ही समय में, यह नई पेंटिंग शैली भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैल गई, जैसे कि कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, दिल्ली, पंजाब, और पश्चिमी भारत के केंद्र तक तक प्रसारित हो गयी।

हर क्षेत्र का कार्य अपनी विशिष्ट शैली से पहचाना जा सकता है, जो पूर्वी क्षेत्रीय परंपराओं से उत्पन्न हुई और उनसे काफी प्रभावित हुई। "कंपनी पेंटिंग्स" समकालीन भारत का वास्तविक वर्णन है, जिसमें मध्यकालीन भारतीय लघुचित्र शैली का संचारण भी समाहित है।

मूल रूप में, दक्षिण एशियाई कंपनी पेंटिंग्स दक्षिण एशिया और यूरोप के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के एक दृश्य माध्यम है, भारतीय भू-दृश्य और स्थानीय व्यक्तित्व केवल चित्रशाला के उदाहरण नहीं थे; ये 18वीं सदी तक समाचार भी थे, जिनके लिए समकालीन चित्रकारों की इस क्षेत्र में विशेष आवश्यकता थी।

2. शोध पद्धति

यह पेपर भारत के विभिन्न संग्रहालयों में प्रदर्शित मुगल लघुचित्रों की कई पुस्तकों, पत्रिकाओं और पांडुलिपियों का अध्ययन करने के बाद तैयार किया गया है।

3. उद्देश्य

- कंपनी पेंटिंग में यूरोपीय प्रभाव दिखाना
- परिप्रेक्ष्य के साथ चित्रांकन और परिदृश्य को समझना
- सांस्कृतिक विविधता समझने के लिये

4. निष्कर्ष

कंपनी चित्रकला उपनिवेशी भारत में कोलोनियल भेटवार्ताओं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सटीक विरासत का प्रतीक है। यह कला और संस्कृति के प्रतीक के रूप में उच्च मानकों का प्रतिनिधित्व करती है, जो कोलोनियलवाद, कलात्मक नवाचार, और सांस्कृतिक मेल-जोल की जटिलताओं को आत्मसात करती है

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.